अमामा टोपी और कुरता

मौलाना फ़ज़्लुर्रहमान आज़मी

अमामा, टोपी और कुरत

अमामा टोपी और कुरता

मौलाना फ़ज़्लुर्रहमान आज़मी

www.idaraimpex.com

पुस्तक का नाम

अमामा टोपी और कुरता

लेखक

मैलाना फ़ज़लुर्रहमान आज़मी

अनुवादक

अहमद नदीम नदवी

Namaaz Ki Pabandi aur Uski Hifazat

प्रकाशन : 2013

ISBN 81-7101-513-1

TP-180-13

Published by Mohammad Yunus for

IDARA IMPEX

D-80, Abul Fazal Enclave-I, Jamia Nagar
New Delhi-110 025 (India)
Tel.: 2695 6832 Fax: +91-11-6617 3545
Email: **sales@idaraimpex.com**
Visit us at: **www.idarastore.com**

Designed & Printed in India

Typesetted at: **DTP Division**

IDARA ISHA'AT-E-DINIYAT

P.O. Box 9795, Jamia Nagar, New Delhi-110025 (India)

विषय-सूची

विषय पृष्ठ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानर्निर्रहीम

अमामा, टोपी और कुरता

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, सहाबा रज़ि० व ताबईन के क़ौल,फ़ेल, अमल और नेक और भले बुज़ुर्गों के क़ौल और फ़ेल (कथन, कार्य, कर्म) की रोशनी में।

नह्मदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम व अला आलिही व सह्बिही, व उम्मतिही अजमईन इला यौमिद्दीन० उम्मा बाद

इसमें कोई शक नहीं कि रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हर-हर अदा एक सच्चे और शैदाई उम्मती के लिए न सिर्फ यह कि पैरवी के लायक़, बल्कि मर मिटने के क़ाबिल है, भले ही उसका ताल्लुक़ इबादतों से हो या रोज़मर्रा की आदतों, उठने-बैठने, चलने-फिरने, बात-चीत करने, खाने-पीने, पहनने-ओढ़ने वग़ैरह से हो, इसलिए रसूलकी मुहब्बत से आशना उम्मती को हर वक़्त इन चीज़ों की तलाश में रहना चाहिए और जहां तक मुम्किन हो, कोशिश करनी चाहिए कि उनको अपनी ज़िंन्दगी में दाख़िल करे और जिन चीज़ों पर अमल मुश्किल हो, उसको भी अच्छी और मुहब्बत भरी निगाह से देखे और अमल न करने पर शर्म और अफ़सोस महसूस करे।

इस सिलसिले में यह जान लेना चाहिए कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नतें दो क़िस्मों पर मानी गई हैं–

1. सुनने हुदा (हिदायत देने वाली सुन्नत)

2. सुनने ज़वाइद (ज़्यादा से ज़्यादा अदा की जाने वाली सुन्नतें)

अल्लामा शामी ने इन दोनों की तफ़्सीर इस तरह की है–

सुनने हुदा : वे सुन्नतें हैं, जिन को नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम या आपके बाद खुलफ़ा-ए-राशिदीन ने हमेशा किया हो और ये मुकम्मलाते दीन से होती हैं और वाजिब के क़रीब, इसलिए इन का छोड़ने वाला गुमराह जाना जाता है और इनका छोड़ना ग़लत और मकरूह क़रार पाता है, जैसे अज़ान, इक़ामत और जमाअत की नमाज़।

सुनने ज़वाइद : वे सुन्नतें हैं, जिनपर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का लगातार अमल रहा हो कि वे आदत बन गई हों, शायद ही कभी छोड़ा हो, लेकिन मुकम्मलाते दीन और शआइरे दीन (दीन को मुकम्मल करने वाले और दीन की पहचान) में से नहीं, इसलिए इनके छोड़ देने को ग़लत और मकरूह नहीं कहा जाता। जैसे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लिबास (पहनने) का तरीक़ा, क़ियाम और क़ुऊद का तरीक़ा और रुकूअ व सुजूद को लम्बा करना।

और एक चीज़ नफ़्ल है। यह फ़र्ज़ व वाजिब सुन्नत की दोनों क़िस्मों के सिवा है, इसी में मुस्तहब व मंदूब भी दाख़िल हैं, इसके पसन्दीदा होने की कोई आम या ख़ास दलील होगी, लेकिन इस पर आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लगातार करने का अमल नहीं फ़रमाया होगा, इसी लिए इसका दर्जा ज़्यादा सुन्नतों से कम है, हां, कभी यह आम मानी में आ जाता है, यानी फ़र्ज़ व वाजिब से ज़्यादा, उस वक़्त उसमें सुनने रवातिब और ताकीदी सुन्नतें भी दाख़िल होती हैं, जिसे फ़िक़्ह में कहते है 'सुन्नते मुअक्कदा' (**'बाबुल वित्र वन्नवाफ़िल'**) इसमें ताकीदी सुन्नतें भी ज़िक्र करते हैं।

—रद्दुल मुख़्तार, भाग 1, पृ० 70, नोमानिया

अल्लामा शामी ने इस तहक़ीक़ का ज़िक्र करके लिखा है कि यह तहक़ीक किसी और किताब में तुमको नहीं मिलेगी। —शामी, पृ० 70, वुज़ू की सुन्नतों का बयान

इससे मालूम हुआ कि लिबास वग़ैरह में भी हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत की पैरवी है। इसमें बहुत ख़ैर और बरकत है, अगरचे उसको छोड़ने से गुमराही या कराहत लाज़िम नहीं आती।

तंबीह— यह हुक्म लिबास से ताल्लुक़ रखने वाले उन मामलों के बारे में है, जिनके बारे में अम्र व नह्य नहीं आई है, वरना मिसाल के तौर पर टख़ने के नीचे कुरता, पाजामा और लुंगी का लटकाना मकरूह है, इसलिए कि उससे मना किया गया है। रेशमी कपड़ा मर्द के लिए पहनना ना जायज़ है। ऐसा लिबास जिससे फ़ख़्र मालूम हो, वह भी मना है, इसी तरह सतरे औरत का छिपाना वाजिब है, ऐसा कपड़ा पहनना, जिससे शर्मगाह न छिपे, जायज़ नहीं या ऐसा तंग लिबास पहनना कि शर्मगाह की बनावट झलके, मकरूह है। व ग़ैर ज़ालिक०

अमामा

अमामा के बारे में हज़रत शैखुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करिया साहब कांधलवी रह० ने शिमाइले तिर्मिज़ी की शरह ख़साइले नबवी में लिखा है कि अमामा का बांधना ऐसी सुन्नत है जिस पर बराबर अमल किया गया है, नबी अकरम, फ़ख़्रे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अमामा बांधने का भी हुक्म नक़ल किया गया है, चुनांचे इर्शाद है कि आमामा बांधा करो, इससे हिल्म में बढ़ जाओगे।

—फ़त्हुलबारी

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से किसी ने पूछा, क्या अमामा बांधना सुन्नत है? उन्होंने फ़रमाया, हां सुन्नत है।

एक हदीस में आया है, अमामा बांधा करो, अमामा इस्लाम का निशान है और मुसलमान और काफ़िर में फ़र्क़ करने वाला है।

(ऐनी ख़साइले नबवी, पृ० 68, बाबुल अमामा)

अमामा से मुताल्लिक़ हदीसें

अमामा से मुताल्लिक़ बहुत सी हदीसें आई हैं, कुछ सहीह, कुछ ज़ईफ़, कुछ मौज़ूअ (गढ़ी हुई), अल्लामा अब्दुर्रऊफ़ मनावी मिस्री (वफ़ात : 1003 हि०) शरह शिमाइले तिमिर्ज़ी में लिखते हैं--

अमामा सुन्नत है, ख़ासतौर से नमाज़ के लिए और तजम्मुल (अच्छा लगने के) इरादे से, इसलिए कि इसमें बहुत सी हदीसें हैं और बहुत सी जो ज़ईफ़ हैं, उनका ज़ोफ़ बहुत से तरीक़ों से आने से दूर हो जाता है और अक्सर को मौज़ू समझना तसाहुल (बे-सोचा-समझा) है।

—हामिश जमउल वसाइल शरह शिमाइल, भाग 1, पृ०165

अमामा से मुताल्लिक़ मरफ़ूअ़ हदीसें

1. हज़रत अम्र बिन उमैया जुमरी रज़ि० फ़रमाते हैं कि मैं ने हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अमामा और मोज़ों पर मसह करते देखा

— बुख़ारी शरीफ़, भाग 1, पृ० 33

2. हज़रत मुग़ीरह बिन शोबा रज़ि० से रिवायत है कि हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वुज़ू फ़रमाया और सर के अगले हिस्सों में, साथ ही अमामा

और मोज़ों पर मसह फ़रमाया। —मुस्लिम शरीफ, भाग 1, पृ० 135

3. हज़रत अम्र बिन हुरैस रज़ि० से रिवायत है कि हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने लोगों को खुत्बा दिया, तो आपके (सर के) ऊपर काला अमामा था।

—मुस्लिम शरीफ, भाग 1, पृ० 439, व इब्ने अबी शैबा, भाग 8, पृ० 233

दूसरी रिवायत में है कि मैंने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर काला अमामा देखा। (शिमाइले तिर्मिज़ी, पृ० 8, इब्ने माजा, पृ० 256)

4. हज़रत जाबिर रज़ि० से रिवायत है कि हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का की फ़त्ह के दिन मक्का मुकर्रमः में दाखिल हुए, तो आप (के सर) पर काला अमामा था।

—(मुस्लिम, भाग 1, पृ० 439 व तिर्मिज़ी, पृ० 304, हदीस हसन सहीह इब्ने माजा पृ० 256)

5. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है कि फ़त्हे मक्का के दिन हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मक्का मुकर्रमा में दाखिल हुए, तो आप पर काला अमामा था। —इब्ने माजा, पृ० 256, इब्ने अबी शैबा, भाग 9, पृ० 237

फ़ायदा : इन सब रिवायतों से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का काला अमामा बांधना साबित हुआ। ये तमाम रिवायतें बिल्कुल सही हैं।

6. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने (वफ़ात के मरज़ में) खुत्बा दिया तो आप पर काला अमामा था। (शिमाइले तिर्मिज़ी, पृ० 8 बाब अमामतुन्नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम व बुख़ारी शरीफ़ भाग 1, पृ० 536)

रिवायत में असाबा व समा का लफ़्ज़ है और असाबा हर उस चीज़ को कहा जाता है जो लपेटी जाए और अमामा भी लपेटा जाता है, इसलिए इसमें कोई परेशानी नहीं।

दूसरा तर्जुमा इसका यह होगा, चिकनी पट्टी यानी मुबारक सर पर आप पट्टी (शायद सर दर्द की वजह से) बांधे थे जो (शायद तेल लगाने की वजह से) चिकनी थी।

7. हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि० से रिवायत है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब कोई नया कपड़ा पहनते, तो उसका नाम लेते अमामा, कुरता या चादर, फिर फ़रमाते, ऐ अल्लाह! तेरा शुक्र है कि तूने मुझे यह पहनने को दिया। मैं इसकी ख़ैर मांगता हूं और उस ख़ैर को जिसके लिए यह बनाया गया और उसके शर से तेरी पनाह में आता हूं और उस शर से जिसके लिए

बनाया गया। (तिमिर्ज़ी, भाग 1, पृ०306 और उसको हसन बताया, साथ ही मुस्तदर जो भाग 4, पृ० 192 और हाकिम ने मुस्लिम की शर्त के मुताबिक़ सहीह बताया और ज़हबी ने भी इससे मुवाफ़क़त की।)

8. हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि मैंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को वुज़ू करते देखा। आप पर क़तरी अमामा था। आपने अमामा के नीचे अपना हाथ दाख़िल फ़रमाया और सर के अगले हिस्से का मसह फ़रमाया और अमामा को नहीं खोला– अबू दाऊद, पृ० 19

क़तरी : यह एक क़िस्म की मोटी खुरदरी चादर होती है। सफ़ेद ज़मीन पर लाल धागे के चार खाने (मुस्तती) बने होते हैं, इस क़दर कि सफ़ेद रंग पर लाली छाई होती है। इस रिवायत से लाल रंग के अमामे को जायज़ होने पर दलील ली जाती है।

–बज़्लुल मज्हूद, शरह अबूदाऊद, भाग 1, पृ० 88

9. अब्दुर्रहमान सलमी रज़ि० कहते हैं कि मैंने देखा कि अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० हज़रत बिलाल रज़ि० से आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वुज़ू के बारे में पूछ रहे थे, उन्होंने बताया कि हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी ज़रूरत के लिए जाते तो मैं पानी हाज़िर कर देता। हज़रत वुज़ू फ़रमाते, अमामा और आंखों के किनारों पर हाथ फेरते। –अबू दाऊद, पृ० 29

कुछ नुस्ख़ों के लिहाज़ से यह हदीस भी एतबार की है।

–बज़्लुल मज्हूद, भाग, 1 पृ० 93

इन तमाम रिवायतों से आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अमामा बांधना मालूम होता है।

10. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मुहरिम (जो एहराम में हो) कुरता, अमामा, पाजामा और टोपी (एक ख़ास क़िस्म की, जिसको बुरनम कहते हैं) नहीं पहन सकता।

–बुख़ारी शरीफ़, भाग 1, पृ०209, भाग 2, पृ० 864 और हदीस की दूसरी किताबें

इससे मालूम हुआ कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में लोग ये कपड़े पहनते थे, उसमें अमामा का भी ज़िक्र हुआ है, दूसरी बहुत सी रिवायतें आ रही हैं, जिनसे सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम का टोपी और अमामा का पहनना साबित है।

अमामा में शिमला लटकाना

अमामा बांधने में यह तरीक़ा बेहतर है कि शिमला लटकाया जाए, यानी उसके नीचे या ऊपर वाले किनारे को या दोनों को लटकाया जाए और लटकाने में बेहतर शक्ल यह है कि पीछे लटकाया जाए, ज़्यादा एतबार के क़ाबिल रिवायतों में यही सूरत आई है; शिमला न लटकाने को भी कुछ उलेमा ने जायज़ बतलाया है। —जमउल वसाइल, भाग 1, पृ० 168

11. हज़रत अम्र बिन हुरैस रज़ि० से रिवायत है कि मैंने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मिंबर पर देखा। आप पर काला अमामा था। उसके दोनों किनारों को आपने अपने दोनों शानों के दर्मियान (यानी पीछे) लटकाया था।

—मुस्लिम भाग 1, पृ० 440 व इब्ने अबी शैबा, भाग 8, पृ० 239, इब्ने माजा, पृ० 256, व अबूदाऊद पृ०563

12. अता बिन अबी रिबाह रह० फ़रमाते हैं कि मैं अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० के साथ था। एक नवजवान ने उनसे अमामा के शिमले के बारे में पूछा, तो फ़रमाया, मैं उसको जानता हूं, तुमको सही बताऊंगा, फ़रमाया, मैं हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मस्जिद में था। हज़रत के साथ ये सहाबा रज़ि० भी थे, अबूबक्र रज़ि०, उमर रज़ि०, अली रज़ि०, इब्ने मसऊद रज़ि०, हुज़ैफ़ा रज़ि०, इब्ने औफ़ रज़ि० और अबू सईद खुदरी रज़ि०, ये कुल दस लोग हुए। एक अंसारी नवजवान आया, हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सलाम करके बैठ गया ...... हज़रत उसकी तरफ़ मुतवज्जह हुए, (कुछ नसीहत फ़रमाई) फिर अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० को हुक्म दिया कि एक दस्ता जाने वाला है, उसके लिए तुम तैयार हो जाओ। सुबह को अब्दुर्रहमान तैयार होकर आ गए। काले रंग का सूती अमामा बांधे हुए थे। हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको अपने क़रीब किया, उनका अमामा खोला और सफ़ेद रंग का अमामा बांधा और पीछे चार उंगुल या उसके क़रीब लटकाया और फ़रमाया, इब्ने औफ़! अमामा इस तरह बांधा करो, यह वाज़ेह और बेहतर है। (या यह मतलब है कि यह अरबी और बेहतर तरीक़ा है)

फिर हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत बिलाल रज़ि० को हुक्म दिया कि झंडा अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० को दे दो।

—हदीस मुस्तदरक हाकिम भाग 4, पृ० 540

हाकिम ने कहा, यह हदीस बुख़ारी व मुस्लिम में नहीं आई है, लेकिन इसकी सनद सहीह है। ज़हबी ने भी इससे मुवाफ़क़त की। अल्लामा हैसमी ने फ़रमया कि इसको तबरानी ने अवसत में रिवायत किया और इसकी सनद हसन है।

(मज्मउज़्ज़ वाइद, भाग 2, पृ० 123)

13. हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि ग़ज़वा ख़ंदक़ के दिन मैंने एक आदमी को देखा कि वह्य कलबी की शक्ल के हैं, एक सवारी पर सवार और हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से चुपके-चुपके बातें कर रहे हैं उनके सर पर अमामा है और उसका किनारा लटकाया हुआ है। मैंने हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा, तो फ़रमाया कि वह जिब्रील अलैहिस्सलाम थे। मुझे अल्लाह का हुक्म दिया कि बनी क़ुरैश की तरफ़ निकलूं।

—मुस्तदरक हाकिम, भाग 4, पृ० 193

हाकिम ने कहा, यह हदीस सहीहुल अस्नाद है। बुख़ारी व मुस्लिम ने इसकी तख़्रीज नहीं की है। ज़हबी ने भी कहा सहीह है।

14. हज़रत आइशा रज़ि० ही से रिवायत है कि एक आदमी तुर्की घोड़े पर सवार हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया। उस पर अमामा था। दोनों शानों के दर्मियान उसका किनारा लटका रखा था। मैंने हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा, तो फ़रमाया तुमने उनको देख लिया था वह जिब्रील अलैहिस्सलाम थे।

—मुस्तदरक हाकिम, वही

15. हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब अमामा बांधते तो दोनों शानों के दर्मियान (शिमला) लटकाते थे। नाफ़ेअ़ (हज़रत इब्ने उमर रज़ि० के शागिर्द) फ़रमाते हैं कि इब्ने उमर रज़ि० भी ऐसा ही करते थे। अबैदुल्लाह (इस हदीस के एक रावी) फ़रमाते हैं कि मैंने क़ासिम और सालिम को देखा कि ये दोनों भी ऐसा करते थे।

—तिर्मिज़ी, भाग 1, पृ० 304

तिमिज़ी ने कहा, यह हदीस ग़रीब है। साहिबे तोहफ़तुल अहवज़ी शारेह तिर्मिज़ी फ़रमाते हैं कि तिमिर्ज़ी ने इस पर सेहत या हसन का कोई हुक्म नहीं लगाया। ज़ाहिर यह है कि यह हदीस हसन है। हदीस अम्र बिन हुरैस जो मुस्लिम में आई है, उसकी ताईद करती है और दूसरी हदीसें भी।

—तोहफ़ा, भाग 3, पृ० 50

मिश्कात में है कि तिमिर्ज़ी ने इसको रिवायत किया और फ़रमाया कि यह

हदीस हसन ग़रीब है। —पृ० 374

इससे मालूम होता है कि साहिबे मिश्कात के पास तिर्मिज़ी का जो नुस्ख़ा था, उसमें ग़रीब के साथ हसन भी था। आलमे अरब के छपे हुए कुछ नुस्ख़ों में हमने भी लफ़्ज़ हसन देखा है।

16. हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० को अमामा बांधा और चार अंगुल लटकाया और फ़रमाया कि जब मैं आसमान पर गया था, तो अक्सर फ़रिश्तों को अमामा बांधे हुए देखा था।

—तबरानी ने इसको नक़ल किया, इसकी सनदें ज़ईफ़ हैं, मज्मउज़्ज़ वादूद, भाग 5, पृ० 123

17. हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ि० से रिवायत है कि जिब्रील अलैहिस्सलाम आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आए तो उन पर काला अमामा था और उसके किनारों को पीछे लटकाया था। (उसको तबरानी ने नक़ल किया, उसमें उबैदुल्लाह बिन तमाम एक रावी ज़ईफ़ हैं।)

—मज्मउज़्ज़ वाइद, भाग 5, पृ० 123

18. हज़रत सौबान रज़ि० से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्ल जब अमामा बांधते तो आगे और पीछे लटकाते। (तबरानी ने इसको मोजम औसत में रिवायत किया, इसमें हज्जाज रिवायत करने वाले ज़ईफ़ हैं।)

—मज्मउज़्ज़ वाइद, भाग 5, पृ० 123

19. अबू उमामा रज़ि० से रिवायत है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब किसी को वाली बना कर भेजते, तो उसको अमामा बांधते और दाहिनी तरफ़ कान की जानिब अमामा को लटकाते (यह तबरानी की रिवायत है, इसमें जमीअ एक रिवायत करने वाले ज़ईफ़ हैं।)

—मज्मुउज़्ज़वाइद, भाग 5, पृ० 123

20. अबू अब्दुस्सलाम कहते हैं कि मैंने इब्ने उमर रज़ि० से पूछा कि हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम किस तरह अमामा बांधते थे तो फ़रमाया कि अमामा के बीच को अपने सर पर लपेटते थे और पीछे उसको दाख़िल कर देते थे और दोनों शानों के दर्मियान उसको लटकाते थे। (तबरानी ने औसत में उसको रिवायत किया, इसके तमाम रिवायत करने वाले सहीह के रावी हैं, सिवाए अब्दुस्सलाम के, लेकिन वह भी सिक़ा (विश्वशनीय) हैं।

—मज्म उज़्ज़वाइद, भाग 5, पृ० 123, फ़ल्हुलक़दीर, भाग 5, पृ०123

21. हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझको अमामा बांधा, तो आगे और पीछे लटकाया। (अबू दाऊद, पृ० 564) इसमें एक रिवायत करने वाले मज्हूल हैं।

22. हज़रत उबादा रज़ि० से रिवायत है कि हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम अमामा बांधा करो, इसलिए कि वह फ़रिश्तों की निशानी है और पीछे उसको लटकाया करो। (बैहक़ी ने शोबुल ईमान में उसको रिवायत किया।

—मिश्कात पृ० 377

23. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से यह हदीस भी रिवायत की गई है। (तबरानी ने इसको रिवायत किया, इसमें एक रिवायत करनेवाला दारे क़ुत्नी के क़ौल के मुताबिक़ मज्हूल है।)

—मज्मउज़्ज़वाइद, भाग 5, पृ० 123

24. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से भी यह हदीस रिवायत की गई है। यह भी ज़ईफ़ है।

—मक़ासिद हसना, पृ० 466

25. एक साहब हज़रत इब्ने उमर रज़ि० के पास आए और पूछा कि अबू अब्दुर्रहमान! (यह अब्ने उमर रज़ि० की कुन्नियत है) क्या अमामा सुन्नत है? फ़रमाया, हां आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इब्ने औफ़ से फ़रमाया कि जाओ अपने कपड़े अपने ऊपर लटका लो और हथियार पहन लो। चुंनाचे उन्होंने ऐसा किया, फिर वह हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आए। आपने उनके कपड़े को लेकर अमामा बांधा तो आगे और पीछे लटकाया।

—उम्दतुल क़ारी, भाग 29, पृ० 307 अन किताबिल जिहाद : इब्ने अबी आसिम

26. हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि० को सूती काला अमामा बांधा और आगे इतना-सा बाक़ी रखा। —उम्दुतुल क़ारी, भाग 21, पृ 307, अन इब्ने अबी शैबा

शायद इतना-सा कहते हुए उंगली से इशारा किया होगा जिसका रिवायत में ज़िक्र नहीं। अगली रिवायत इसको वाज़ेह कर रही है।

27. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है कि हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इब्ने औफ़ रज़ि० को काला अमामा बांधा और पीछे चार अंगुल के जितना लटकाया और फ़रमाया कि इस तरह अमामा बांधा करो।

—उम्दतुलक़ारी, भाग 29, पृ० 307

इन दोनों रिवायतों में आगे और पीछे का जो इख़्तिलाफ़ है, उसको कई वाक़ियों पर महमूल कर सकते हैं। इससे पहले नं. 12 पर इब्ने औफ़ का वाक़िया

गुज़रा। इसमें और उनमें अमामा के रंग के बारे में जो इख़्तिलाफ़ है, उसका भी यही जवाब है।

28. अब्दुल्लाह बिन बशीर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ख़ैबर के मौक़े पर हज़रत अली रज़ि० को भेजा तो काला अमामा बांधा और पीछे और बाएं मोंढ़े की तरफ़ से लटकाया।—उम्दा, भाग 21, पृ० 307

अब्दुल आला बिन अदी कहते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अली रज़ि० को ग़दीरे ख़म के मौक़े पर बुलाकर अमामा बांधा तो अमामा का शिमला पीछे की तरफ़ लटकाया, फिर फ़रमाया कि इसी तरह अमामा बांधा करो, इसलिए कि यह अमामा इस्लाम की निशानी है और मुसलमानों और मुश्रिकों के दर्मियान फ़र्क़ करने वाली चीज़ हैं।

— उम्दतुल क़ारी, भाग 21, पृ० 208 अन मारफ़तिस्सहाबा अबूनुऐम

अब्दुर्रहमान बिन अब्दुल्लाह बिन साद राज़ी कहते हैं कि मेरे वालिद ने अपने वालिद साहब से नक़ल किया कि उन्होंने बुख़ारा में एक आदमी को देखा जो ख़च्चर पर सवार थे और काला अमामा पहने हुए थे। कह रहे थे कि यह अमामा अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे पहनाया है।

(तिमिर्ज़ी, भाग 2, पृ० 169, तोहफ़ा भाग 4, पृ० 206)

उन सहाबी का नाम अब्दुल्लाह बिन ख़ाज़िम था, जो अमीर ख़ुरासान हुए। —तोहफ़ा, वहीं

अमामा की मिक़्दार

मुल्ला अली क़ारी रह० जमउल वसाइल शरह शिमाइल में लिखते हैं—

'शेख़ जज़री ने लिखा है कि मैंने किताबों को तलाश किया, सीरत व तारीख़ की किताबें भी देखीं कि कहीं मुझे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अमामा की मिक़्दार मिल जाए, लेकिन मुझे कुछ नहीं मिला, यहां तक कि मुझे ऐसा शख़्स मिला जिस पर मुझे एतमाद है, उसने बताया कि इमाम नववी ने लिखा है कि रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास दो आमामे थे, एक छोटा, दूसरा बड़ा। छोटे की मिक़्दार सात ज़िराअ़ और बड़े की मिक़्दार बारह ज़िराअ़ थी। — तस्हीह मसाबीह अन शेख़जज़री

मुल्ला अली क़ारी आगे लिखते हैं कि अल-मदख़ल के कलाम से ज़ाहिर होता है कि हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अमामा सात ज़िराअ़ का था,

छोटे-बड़े की कोई तफ़्सील नहीं। —जमउल वसाइल, भाग 1, पृ० 168

मुल्ला अली क़ारी ने मिरक़ात में भी यही बात लिखी है। जज़री का ज़िक्र किया गया क़ौल अल्लामा अब्दुर्रऊफ़ मनावी ने भी शरह शिमाइले तिर्मिज़ी में ज़िक्र किया है।

अल्लामा सुयूती ने अलहावी फ़िल फ़ताबा में फ़रमाया है कि हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अमामा शरीफ़ की मिक़्दार किसी रिवायत से साबित नहीं। —तोहफ़तुल अहवज़ी, भाग 3, पृ० 49

मौलाना अब्दुर्रहमान मुबारकपूरी लिखते हैं कि जो यह दावा करता है कि हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अमामा की मिक़्दार इतनी थी, उसको किसी दलील से साबित करना चाहिए, सिर्फ़ दावा करने से कुछ नहीं होता।

—तोहफ़तुल अहवज़ी, भाग 3, पृ० 49

हज़रत शेख़ मुहम्मद ज़करिया रहमतुल्लाहि अलैहि लिखते है, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अमामे की मशहूर मिक़्दार रिवायतों में नहीं है। तबरानी की एक रिवायत में सात ज़िराअ़ आई है, बेजौरी ने इब्ने हजर से बे-असल होना नक़ल किया है। —ख़साइले नबवी शरह शिमाइल तिर्मिज़ी, पृ० 67

अल्लामा अब्दुर्रऊफ़ मनावी ने इब्ने हजर हैसमी से नक़ल किया है, वह फ़रमाते हैं कि जान लो कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अमामा की लम्बाई-चौड़ाई के बारे में, जैसा कि कुछ हाफ़िज़ों ने फ़रमाया, कोई बात तहक़ीक़ की हुई नहीं, बाक़ी तबरानी में इसके लम्बे होने के बारे में जो आया है कि वह सात ज़िराअ़ का था और किसी और ने हज़रत आइशा रज़ि० से जो नक़ल किया है कि सात ज़िराअ़ लम्बा और एक ज़िराअ़ चौड़ा था और यह कि सफ़र में सफ़ेद और हज़र में काला ऊनी था और कुछ ने इसके उलट कहा और यह कि उसका शिमला सफ़र में इसके सिवा पर होता था और हज़र में उसी अमामा का होता था। यह सब बे-असल है। (इसका सबूत नहीं)

—शरह मनावी लिश-शिमाइल मय जमइल वसाइल, भाग1, पृ०170

इन बातों से मालूम हुआ कि फ़न के इन माहिरों और तहक़ीक़ करने वालों से अमामा की मिक़्दार के बारे में एतबार के क़ाबिल कोई इबारत नहीं मिल सकी, इसलिए यह कहना मुनासिब होगा कि इस सिलसिले में कोई हद बंदी नहीं, जिसको लोग अमामा समझें उससे यह सुन्नत अदा हो जाएगी। वल्लाहु आलम बिस्सवाब०

मुफ़्ती अज़ीज़ुर्रहमान साहब देवबन्दी रह० लिखते हैं, तौलिया और रूमाल टोपी पर बांधना मकरूह नहीं, बल्कि अमामा के तौर पर बांधने का इतलाक़ ही उस पर होगा और बांधने वाला सवाब का हक़दार होगा कि इसमें शरई हदबन्दी नहीं। —फ़तावा दारुल उलूम मबूब मुकम्मल, भाग 1, पृ० 159

अल्लामा अनवर शाह कश्मीरी रह० की तक़रीरों में अमामा के बारे में ये इर्शाद मौजूद हैं।

'ख़ुज़ू ज़ीनतकुम अिन-द कुल्लि मस्जिद' के तहत फ़रमाते हैं कि लफ़्ज़ ज़ीनत यह चाहता है कि आदमी जब मस्जिद में आए तो अच्छी से अच्छी हालत में हो। चुंनाचे हदीस व फ़िक़्ह ने इसको बयान किया है। हदीस में है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अमामा नमाज़ में सात ज़िराअ़ का था और फ़िक़्ह में है कि तीन कपड़ों में नमाज़ पढ़ना मुस्तहब है, उनमें से एक अमामा भी है —फ़ैज़ुलबारी, भाग 2, पृ०8

साथ ही फ़रमाते हैं, शेख़ शम्सुद्दीन जज़री ने फ़रमाया कि मैंने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अमामा की मिक़्दार की खोज की तो शेख़ मुहीयुद्दीन नववी के कलाम से मालूम हुआ कि हज़रत का अमामा तीन तरह का था—

एक तीन हाथ का था,

दूसरा सात हाथ का,

तीसरा बारह हाथ का। यह हाथ आधा गज़ का होता है। तीसरा अमामा ईदैन (दोनों ईदों) के लिए था। —फ़ैज़ुद्दीन, भाग 4, पृ० 375

तिर्मिज़ी के हवाले में फ़रमाते हैं, हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का अमामा अक्सर वक़्तों में तीन ज़िराअ़ का था। पांचों नमाज़ों के लिए सात ज़िराअ़ का था और जुमा व ईदैन में 12 ज़िराअ़ का था।

—अल उर्फ़ुश-शज़ी मअत्तिर-मिज़ी, भाग 1, पृ० 304

तंबीह— अल्लामा कश्मीरी की इन तक़रीरों में तीन ज़िराअ का जो ज़िक्र है, इनको किसी और किताब में देखने का इत्तिफ़ाक़ नहीं हुआ। शेख़ जज़री का कलाम मुल्ला अली क़ारी और अब्दुर्रऊफ़ मनावी की किताबों से गुज़रा, इसमें सिर्फ़ 7 और 12 का ज़िक्र है, तीन का नहीं। इसी तरह पांचों नमाज़ों और ईदैन वग़ैरह की तफ़्सील भी किसी किताब में नज़र से नहीं गुज़री। वल्लाहु आलमु बिस्सवाब

और अमामा की मिक़्दार जब तक हदीस की किताब में न मिल जाए, तै नहीं की जा सकती। हज़रत कश्मीरी का यह फ़रमाना कि हदीस में है कि सात ज़िराअ का था, तो सवाल यह है कि किस हदीस में? फ़न के इमामों का कलाम आप ने देखा, उनको कोई भरोसे की हदीस इस बारे में नहीं मिल सकी, इसलिए हज़रत कश्मीरी के इस कलाम पर नज़र रखनी ज़रूरी है, हां फ़िक़्ह में ज़रूर ज़िक्र आया है, चुनांचे कबीरी शरह मनीयतुल मुसल्ला में ज़िक्र हुआ है कि नमाज़ तीन कपड़ों में मुस्तहब है, इनमें एक अमामा भी है। (कबीरी पृ० 214) इसलिए अमामा का मुस्तहब होना तस्लीम है, लेकिन इसकी कोई मिक़्दार मालूम नहीं। वल्लाहु आलमु बिस्सवाब

अमामा और नमाज़

अल्लामा कश्मीरी के कलाम से मालूम हुआ कि अमामा के साथ नमाज़ मुस्तहब है, लेकिन मुस्तहब के छोड़ देने से कराहत लाज़िम नहीं आती। फ़रमाते हैं, अमामा का छोड़ देना मेरे नज़दीक मकरूह नहीं और मकरूह होने की तस्रीह सिर्फ़ फ़तावा दीनिया के मुसन्निफ़ (लेखक) की है। यह सिंध के आलिम हैं, मुझे इनका मर्तबा मालूम नहीं। मेरे नज़दीक तहक़ीक यह है कि इन शहरों में कराहत है, जहां उसको मोहतरम चीज़ समझा जाता हो और जहां इसका एहतिमाम न हो, वहां कराहत नहीं। (फ़ैज़ुल बारी, भाग 2, पृ० 8) इसी तरह की बात अल्लामा अब्दुल हकीम लखनवी ने भी फ़रमाई है। —नफ़उल मुफ़्ती वस्साइल, पृ० 70

हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही रह० ने एक सवाल के जवाब में तहरीर फ़रमाया, बिला अमामा इमामत करना बिला कराहत है, अगरचे अमामा पास रखा हो, अलबत्ता अमामा से सवाब ज़्यादा होता है।

—फ़तावा रशीदिया, पृ०226

और अमामा के साथ नमाज़ पढ़ने-पढ़ाने पर बहुत इसरार भी ठीक नहीं, इसको वाजिब के दर्जे में न समझा जाए, हां मुस्तहब के दर्जे में मानते हुए तर्ग़ीब दी जाए। उलेमा ने यही लिखा है।

अमामा को टोपी पर बांधना

29. हज़रत रूकाना रज़ि० ने फ़रमाया कि मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सुना, फ़रमा रहे थे कि हमारे और मुश्रिकों के दर्मियान फ़र्क़ टोपी और

अमामा बांधना है।

तिर्मिज़ी ने कहा, यह हदीस ग़रीब है और और इसकी सनद दुरूस्त नहीं और हम अबुल हसन अस्क़लानी और इब्ने रुकाना को नहीं पहचानते।

—तिर्मिज़ी, भाग 1, पृ० 308

30. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम टोपी पहनते थे अमामा के नीचे और बग़ैर अमामा के भी और अमामा बांधते थे बग़ैर टोपी के और यमनी टोपी पहनते थे और वह सफ़ेद (दर्मियान में रूई वग़ैरह रख कर) सिली हुई थी और लड़ाई में कान वाली टोपी पहनते थे और कभी टोपी निकाल कर अपने सामने सुतरा के तौर पर रख लेते और नमाज़ पढ़ते और आप की आदते शरीफ़ा यह थी कि अपने हथियार और जानवर और सामान का नाम रख लेते। (उसको रवयानी ने अपनी मुस्नद में और इब्ने असाकिर ने अपनी तारीख़ में नक़ल किया और यह ज़ईफ़ रिवायत है)

—अल-जामिउस्सग़ीर मय फ़ैज़ुल क़दीर लिल मनावी, भाग 5, पृ० 247

अल्लामा मनावी फ़रमाते हैं कि रिवायत में यह जो ज़िक्र किया गया है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम टोपी बग़ैर अमामा के पहनते थे, तो ज़ाहिर यह है कि ऐसा आप घर में करते थे, जब बाहर निकलते थे, तो ज़ाहिर यह है कि बग़ैर अमामा के नहीं निकलते थे। —फ़ैज़ुलक़दीर, भाग 5, पृ० 247

मनावी की इस इबारत से मालूम होता है कि उनके ख़्याल में हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम बाहर हमेशा अमामा पहनते थे।

—वल्लाहु आलम बिस्सवाब

हाफ़िज़ इराक़ी शरह तिर्मिज़ी में फ़रमाते हैं कि टोपी के बारे में सबसे उम्दा सनदें वे हैं जो अबुश-शेख़ ने ज़िक्र की हैं, जिसमें हज़रत आइशा रज़ि० का यह बयान है कि हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सफ़र में कान वाली टोपी पहनते हैं और हज़र में पतली की हुई यानी शामी और इस रिवायत से मालूम होता है कि अमामा टोपी के ऊपर बांधना मुस्तहब और मंदूब है।

—फ़ैज़ुल क़दीर, भाग 5, पृ० 286

इराक़ी और मानवी के कलाम से मालूम हुआ कि उनके ख़्याल में अमामा टोपी के ऊपर बांधना बेहतर है। इसी तरह का मफ़हूम मुल्ला अली क़ारी वग़ैरह की इबारत से भी निकलता है, जो उन्होंने तिर्मिज़ी की हज़रत रुकाना वाली ज़िक्र की गई हदीस की शरह में लिखी है, बल्कि मुल्ला अली क़ारी और अल्लामा

मनावी दोनों ने शिमाइले तिर्मिज़ी की शरह में इब्नुल जौज़ी से कुछ उलेमा का यह क़ौल भी नक़ल किया है कि सिर्फ़ टोपी पहनना मुशिरकों का तरीक़ा है।

—शरहे शिमाइल, भाग 1, पृ० 164-168

तोहफ़तुल अहवज़ी में इब्नुल जौज़ी के बजाए जज़री लिखा है।

—तहिफ़तुल अहवज़ी, भाग 3, पृ० 49

लेकिन यह कहा जा सकता है कि हज़रत रुकाना की हदीस का मतलब यह है कि हम टोपी पर अमामा बांधते हैं और मुश्रिक टोपी के बग़ैर बांधते हैं। शेख़ुल हिंद अल्लामा कश्मीरी और मौलाना ख़लील अहमद रह० ने यही मतलब लिया है।

—अन्वारुल महमूद, भाग 2, पृ०446

यह हमारे और उनके दर्मियान फ़र्क़ है। इससे सिर्फ़ टोपी का मुश्रिकों की हैअत होना लाज़िम नहीं आता, साथ ही वह हदीस ज़ईफ़ है। इसके अलावा इब्ने अब्बास रज़ि० की रिवायत में सिर्फ़ टोपी पहनने का ज़िक्र किया गया हे, गो वह भी ज़ईफ़ है।

इसलिए यह कहना मुनासिब होगा कि तमाम शक्लें जायज़ हैं, अमामा बग़ैर टोपी के और टोपी बग़ैर अमामा के, लेकिन टोपी पर अमामा बांधना सबसे अफ़ज़ल है।

इसलिए कि अमामा बांधना रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का, इसी तरह सहाबा किराम रज़ि० का सही हदीसों से साबित है। वल्लाहु आलम बिस्सवाब

मनावी शरह शिमाइल में शरह ज़ैलई से नक़ल करते हैं कि सर से लिपटी हुई टोपी और बुलन्द (रूई वग़ैरह डाल कर) सिली हुई टोपी या उसके अलावा कोई और टोपी अमामा के नीचे पहनने या बग़ैर अमामा के पहनने में कोई हरज नहीं। इसलिए कि यह सब मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़ल किया गया है और इसी से कुछ लोगों ने कुछ इलाक़ों के इस रिवाज की ताईद पेश की है कि वहां लोगों ने अमामा बिल्कुल छोड़ दिया और उलेमा-ए-किराम सफ़ेद टोपी पर चादर डाल लेते हैं और इससे पहचाने जाते हैं, लेकिन अफ़ज़ल अमामा है।

—भाग 1, पृ० 165

सहाबा किराम व सलफ़ सालिहीन और अमामा

1. बुख़ारी शरीफ़ में एक यहूदी अबू राफ़ेअ अब्दुल्लाह बिन अबुल हुक़ैक़ के क़त्ल का क़िस्सा तफ़्सील से आया है। उसको बयान करते हुए हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अतीक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं चांदनी रात में गिर गया और पिंडुली टूट गई। मैंने अमामा से उसको पट्टी की तरह बांध लिया और चल दिया। —बुख़ारी शरीफ़, पाकिस्तानी एडीशन, भाग 2, पृ० 577

इससे मालूम हुआ कि अब्दुल्लाह अतीक रज़ि० जब इस मुहिम पर रवाना हुए, तो अमामा बांधे हुऐ थे। यह हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने का वाक़िया है और हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ही ने उनको एक जमाअत के साथ भेजा था।

2. हसन बसरी रह० फ़रमाते हैं कि सहाबा किराम रज़ि० सज्दा करते थे और उनके हाथ उनके कपड़ों में हुआ करते थे और उनमें कुछ अपनी टोपी और अमामा पर सज्दा किया करते थे। (इसको अब्दुर्रज़्ज़ाक़ और इब्ने अबी शैबा ने रिवायत किया। इमाम बुख़ारी ने भी इसको तालीक़न ज़िक्र किया है।)

—फ़तहुलबारी, भाग 2, पृ० 493

3. बुख़ारी शरीफ़ की एक लम्बी रिवायत में ज़िक्र है, जाफ़र बिन उमैया ज़ुमरी फ़रमाते हैं कि मैं उबैदुल्लाह बिन अदी के साथ निकला। वहशी रज़ि० के पास पहुंचा और उबैदुल्लाह अपने अमामा को इस तरह लपेटे हुए थे कि वहशी उनकी आंखों और पांव के सिवा किसी चीज़ को नहीं देख रहे थे।

—बुख़ारी, भाग 2, पृ० 583

यह उबैदुल्लाह सहाबी हैं। आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को देखा है (जैसा कि इब्ने हिब्बान में ज़िक्र किया)

इस रिवायत से मालूम हुआ कि उबैदुल्लाह पूरे जिस्म पर कपड़े पहने हुए थे और अमामा में अपने चेहरे को छिपा रखा था।

4. अबू उमर फ़रमाते हैं कि मैंने अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० को देखा था कि एक अमामा ख़रीदा जिसमें नक़्श व निगार था, फिर क़ैंची मंगवाई और उसको काटा। —इब्नेमाजा, पृ० 256

मुसन्निफ़ (लेखक) इब्ने अबी शैबा की आठवीं जिल्द में बहुत से सहाबा किराम और ताबिईन के अमामे का ज़िक्र किया गया है। कई लोगों के बयाने कई

सहाबा और ताबिईन के बारे में ज़िक्र किए गए हैं, थोड़े में वे यों हैं–

5. रिवायत करने वाले कहते हैं कि मैंने हज़रत अली रज़ि० पर काला अमामा देखा, उसके किनारे को पीछे लटकाए हुए थे।

—इब्ने अबी शैबा, भाग 8, पृ० 234

6. दूसरी रिवायत में हैं कि काला अमामा बांधे हुए थे और इसको आगे और पीछे लटकाए हुए थे। —वही, भाग 8, पृ० 235

7. एक और रिवायत मे है कि हज़रत उस्मान रज़ि० की शहादत के दिन हज़रत अली रज़ि० पर काला अमामा था। —वही, भाग 8, पृ० 234

8. हज़रत अनस रज़ि० पर काला अमामा था, बग़ैर टोपी के पीछे लगभग एक ज़िराअ लटकाए हुए थे। —इब्ने अबी शैबा, भाग 8, पृ० 235

9. हज़रत अम्मार रज़ि० पर काला अमामा था। —इब्ने अबी शैबा, वही

10. हज़रत उबैदुर्रहमान पर काला अमामा था।—वही, भाग 8, पृ० 236, 237

11. हज़रत अबुद्दर्दा पर काला अमामा था।—वही, भाग 8, पृ० 236, 237

12. हज़रत नाफ़ेअ़ कहते हैं कि अब्दुल्लाह बिन उमर अमामा बांधते थे और दोनों शानों के दर्मियान लटकाते थे। उबैदुल्लाह बिन उमर कहते हैं कि हमारे मशाइख़ (नाफ़ेअ़ वग़ैरह) ने हमको बताया कि सहाबा किराम को उन्होंने देखा कि अमामा बांधते और शानों के दर्मियान लटकाते।

—वही, भाग 8, पृ० 240

इस मज़्मून का कुछ हिस्सा हदीस नं० 14 में भी गुज़रा है।

13. अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० को देखा कि अमामा बांधे हुए हैं और उसको आगे और पीछे लटकाए हुए हैं और मैं नहीं कह सकता कि दोनों में कौन ज़्यादा लम्बा है? —इब्नु अबी शैबा, वही,

14. इब्नु ज़्ज़ुबैर रज़ि० को देखा कि अमामा के दोनों किनारों को अपने आगे लटकाए हुए हैं। —इब्ने अबी शैबा, वही

15. सुलैमान बिन अबी अब्दुल्लाह कहते हैं कि मैंने शुरू के मुहाजिरों को पाया कि सूती अमामे बांधते थे, काले, सफ़ेद, लाल, हरे और पीले रंग के, अमामा को सर पर रखते, फिर टोपी रखते, फिर अमामा को इस तरह यानी उसके बीच पर लपेटते, थोड़ी के नीचे से उसको निकालते नहीं थे।

16. हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ि० पर लुंगी, चादर और अमामा देखा गया।

17. हज़रत उसामा रज़ि० अमामा बांधते तो इस सक्ल को मकरूह

समझते थे कि दाढ़ी और हलक़ के नीचे उसको करें। —इब्ने अबी शैबा, वही

18. हज़रत वासला रज़ि० पर काला अमामा था।—वही, भाग 8, पृ० 230

19. हज़रत अबू नज़रा रज़ि० पर भी (वही) अपनी गरदन के नीचे से लटकाए हुए थे। —वही, भाग 8, पृ० 240

20. हज़रत हुसैन बिन अली रज़ि० पर भी काला अमामा था।

—वही, भाग 8, पृ० 237

मुहम्मद बिन हनफ़ीया और हसन बसरी पर भी काला अमामा था, साथ ही शाबी और सईद बिन ज़ुबैर पर सफ़ेद अमामा होना भी इब्ने अबी शैबा में ज़िक्र हुआ है।

क़ाज़ी शुरैह और सालिम व क़ासिम का पीछे अमामा का लटकाना भी ज़िक्र किया गया है। —वही, पृ० 240

हज़रत शुरैह एक पेच के साथ अमामा बांधते थे। —वही, पृ० 241

अमामा का रंग

अब तक जो रिवायतें गुज़रीं, उनसे अमामा के रंग का पता चलता है। काले रंग का अमामा सहीह रिवायतों में ज़िक्र हुआ है। सफ़ेद रंग का भी मुस्तदरक, हाकिम और तबरानी की रिवायत से साबित है।

क़ितरी का ज़िक्र भी अबू दाऊद से हो चुका है, जिसमें सुर्ख़ी (ग़ालिब) होती थी। इन रिवायतों से उनके रंग के बारे में तवस्सो मालूम होता है।

दूसरी तरफ़ यह देखिए कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सफ़ेद कपड़े पहनने का हुक्म दिया है।

फ़रमाया—

'तुम्हारे लिए सफ़ेद कपड़ा ज़्यादा मुनासिब है तो उसे पहना करो, यह ज़्यादा पाक और साफ़ होता है और इसमें अपने मुर्दों को क़ुनाया करो।

—फ़त्हुल बारी, भाग 10, पृ० 283

وعليكم بالثياب البيض فالبسوها فانها اطيب واطهر وكفنوا فيها موتاكم اخرجه احمد و اصحاب السنن والحاكم وصححه، وفى حديث ابن عباس فانها من خير ثيابكم اخرجه احمد و اصحاب السنن الاالنسائى وصححه الترمذى وابن حبان۔ (فتح البارى جلد ١٠، صفحہ ٢٨٣)

मनावी शरह जैलई से नक़ल करते हैं कि काले अमामा का पहनना मस्नून है। इसलिए कि इसकी हदीस आई है और जो भी हो, अमामा में अफ़ज़ल सफ़ेद है, हज़रत सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम का काले अमामा का पहनना और फ़रिश्तों का बद्र के दिन पीले अमामा के साथ उतरना इसके ख़िलाफ़ नहीं, इसलिए कि उस वक़्त कुछ ख़ास मक़्सद और कुछ ख़ास मस्लहतें रही होंगी, जिन की वजह से ये रंग अख़्तियार किए गए, जैसाकि कुछ बड़े उलेमा ने इसको बयान फ़रमाया है, इसलिए सहीह हदीस में सफ़ेद कपड़ों के पहनने का जो आम हुक्म आया है और यह कि सफ़ेद रंग ज़िंदगी और मौत दोनों में बेहतरीन है, वह अपनी जगह अमूम के साथ बाक़ी है, इस तरह के वाक़िए उनके ख़िलाफ़ नहीं। (शरह शिमाइले मनावी, भाग 1, पृ० 165) और मानवी ने खुद भी यही फ़रमाया है।

—फ़ैज़ुल क़दीर, भाग 1, पृ० 556

अमामा की फ़ज़ीलत

अमामा की ख़ास फ़ज़ीलत क्या है, तो मालूम होना चाहिए कि अमामा का सुन्नत होना जब साबित है तो कोई ख़ास फ़ज़ीलत न भी साबित हो, तब भी महज़ सुन्नत होना ही उस की फ़ज़ीलत है, जैसे सफ़ेद लिबास का हुक्म हदीस में दिया गया, इसलिए सफ़ेद कपड़ा पहनना अफ़ज़ल होगा, भले ही कोई ख़ास फ़ज़ीलत और सवाब की कसरत न मालूम हो। ऐसे ही अमामा को भी समझना चाहिए।

इसके अलावा अमामा की फ़ज़ीलत में कई रिवायतें आई हैं, इनमें ज़्यादा तर ज़ईफ़ हैं और कुछ गढ़ी हुई। ज़ईफ़ चूंकि कई हैं, इसलिए उनके मजमूए से ताक़त पैदा होगी।

सख़ावी मक़ासिदे हसना में लिखते हैं—

1. इब्ने अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अमामे अरबों के ताज हैं और गोट बांध कर बैठना उन की दीवार है और उनका मस्जिद में बैठना उनका रबात है। (वैलमी ने इसको रिवायत किया)

2. हज़रत अली रज़ि० से इसी मज़्मून की हदीस मरफ़ूअन रिवायत की गई है। इसको क़ज़ाई ने रिवायत किया।

3. इमाम ज़ोहरी से उनका क़ौल इस मज़्मून का रिवायत किया गया है।

इसको बैहक़ी ने नक़ल किया। इब्ने अब्बास रज़ि० की ज़िक्र की गई रिवायत में यह भी है कि अरब के लोग जब अमामा रख देंगे तो अपनी इज़्ज़त खो बैठेंगे। एक रिवायत में यों है अमामा मोमिन का वक़ार है और अरबों की इज़्ज़त, जब अरब अपने अमामे रख देंगे तो इज़्ज़त भी चली जाएगी। (इसको दैलमी ने रिवायत किया)

4. अमामा बांधा करो, तुम्हारी बुर्दबारी बढ़ जाएगी। —बैहक़ी

5. अमामा लाज़िम पकड़ लो, यह फ़रिश्तों की निशानी है और पीछे लटकाया करो। (इसको बैहक़ी ने इब्ने अब्बास से मरफ़ूअन नक़ल किया है)

6. ऊपर वाला मज़्मून (तबरानी और दैलमी ने इब्ने उमर रज़ि० से मरफ़ूअन ज़िक्र किया) ये तमाम रिवायतें ज़ईफ़ हैं। —मक़ासिदे हसना, पृ० 465-466

7. अमामा बांधा करो, हिल्म में बढ़ जाओगे। हाकिम ने इब्ने अब्बास से इसको नक़ल किया और फ़रमाया कि यह हदीस सहीहुल अस्नाद है, लेकिन अल्लामा ज़हबी ने फ़रमाया कि इसके एक रिवायत करने वाले उबैदुल्लाह को इमाम अहमद ने तर्क किया है। —अल- मुस्तदरक, भाग 4, पृ० 193

तबरानी ने भी इब्ने अब्बास से इसको नक़ल किया है, इसकी सनद में एक रावी इम्रान बिन तमाम ज़ईफ़ है, बाक़ी रिजाल सिक़ा हैं।

—मज्म उज़्ज़ वाइद, जिल्द 5, पृ० 122, फ़ैज़ुल क़दीर भाग 1, पृ० 555

ये दोनों तुरुक़ ज़ईफ़ हैं, मौज़ू नहीं। —फ़ैज़ुल क़दीर, वहीं

इनके मज्मूए से क़ूवत पैदा होगी।

8. अमामा बांधा करो, हिल्म में बढ़ जाओगे और अमामे अरब के ताज हैं। (इब्ने अदी और बैहक़ी ने उसामा बिन उमैर से इसको रिवायत किया) यह भी ज़ईफ़ है। —अल-जामिउस्सग़ीर मय फ़ैज़ुल क़दीर, भाग 1, पृ० 555

अल्लामा सख़सवी आगे लिखते हैं कि जो रिवायतें साबित नहीं हैं, उनमें से कुछ ये हैं।

9. दैलमी ने अपनी मुस्नद में इब्ने उमर से मरफ़ूअन रिवायत किया है, अमामा के साथ नमाज़ का सवाब पचीस नमाज़ों के बराबर है और अमामा के साथ जुमा का सवाब सत्तर जुमों के बराबर है।

10. और इसी में है कि फ़रिश्ते जुमा के दिन अमामा बांध कर आते हैं और सूरज डूबने तक अमामा बांधने वाले पर रहमत की दुआ करते हैं।

11. और उसी में है कि अमामा के साथ जुमा बग़ैर अमामा के सत्तर जुमों से अफ़ज़ल है।[1]

12. इब्ने उमर रज़ि० और अबूहुरैरह रज़ि० से रिवायत है कि अल्लाह तआला के कुछ फ़रिश्ते मस्जिद के दरवाज़े पर खड़े रहते हैं। सफ़ेद अमामा वालों के लिए मग़्फ़िरत की दुआ करते हैं।

13. हज़रत जाबिर रज़ि० से रिवायत है कि अमामा के साथ दो रक्अतें बग़ैर अमामा के सत्तर रक्अतों से अफ़ज़ल हैं।

14. अबुद्दर्दा से रिवायत है कि अल्लाह तआला जुमा के दिन अमामा वालों पर रहमत नाज़िल फ़रमाते हैं और उसके फ़रिश्ते रहमत की दुआ करते हैं।

15. हज़रत अली रज़ि० से रिवायत है कि अमामा मुसलमानों और मुश्रिकों के दर्मियान फ़र्क़ करने वाला है।

16. हज़रत रुकाना रज़ि० से रिवायत है कि हमारे और मुश्रिकों के दर्मियान फ़र्क़ करने वाली चीज़ टोपी पर अमामा बांधना है। ये रिवायतें कोई-कोई से ज़्यादा ज़ईफ़ हैं। —मक़ासिदे हसना : सख़ावी, पृ० 466

17. सईद बिन जुबैर से रिवायत है कि जिब्रील अलैहिस्सलाम जब फ़िरऔन को ग़र्क़ करने के लिए आए थे तो उन पर काला अमामा था।

—मुसन्निफ़ इब्ने अबी शैबा, भाग 8, पृ० 326

यह रिवायत मुत्तसिल नहीं, मक़्तूअ है। दो रिवायतों का गढ़ा हुआ होना हदीस के माहिरों की वज़ाहत से मालूम हो जाए, तो वह ख़त्म हैं, बाक़ी ज़ईफ़ हैं, जो कई सहाबा से अलग-अलग सनदों से रिवायत की गई हैं। अक़ीदों और हराम व हलाल के अलावा यानी फ़ज़ाइल में हदीस के माहिर कमज़ोर सनदों को भी क़ुबूल कर लेते हैं। (तदरीबुर्रावी, भाग 1, पृ० 298) जबकि ज़ोफ़ शदीद न हो और ख़ास तौर से जबकि कई तरीक़ों से रिवायत की गई हो।

इसी वजह से शायद फ़ुक़हा-ए-इज़ाम और मुफ़्तियाने किराम ने इन हदीसों के पेशेनज़र यह मान लिया है कि अमामा के साथ नमाज़ में ज़्यादा सवाब मिलता है।

कबीरी में मुस्तहब होना पृ० 214, फ़तावा रशीदिया, पृ० 326 में सवाब ज़्यादा होना और फ़तावा रहीमिया, भाग 4, पृ० 357 में मुस्तहब होना ज़िक्र

1. हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० ने इब्ने उमर रज़ि० की हदीस को मौज़ूअ कहा है। —अल फ़वाइद अल मज्मूआ : शौकानी पृ० 188

किया गया है।

दर्रे मुख़्तार में क़नीया से नक़ल किया है—

'फ़ुक़हा के नज़दीक लंबा अमामा लपेटना और ग़ैर-तंग कपड़े पहनना बेहतर है।

अल्लामा शामी रह० ने तहतावी से यह नक़ल किया है कि शायद उनके यहां इसी का चलन रहा होगा। दूसरी जगह अगर यह चलन हो कि बग़ैर लम्बे होने के लाज़िम की जाती हो तो इल्मी मक़ाम को ज़ाहिर करने के लिए ऐसा ही करेंगे, ताकि फ़ुक़हा पहचाने जाएं और उनसे मसले मालूम किए जाएं।

—दर्रे मुख़्तार मय रद्दुल मुख़्तार, भाग 5, पृ० 250

इमाम बुख़ारी के तज़्किरे में है कि वफ़ात से पहले जब समरक़ंद जाने का इरादा फ़रमाया तो अमामा बांधा और मोज़े पहने।

इमाम मुस्लिम भी इमाम ज़हली के दर्स में अमामा के साथ हाज़िर थे। उनके एलान पर अपनी चादर अमामा पर रखी और चले गए।

—मुक़दमा फ़त्हुलबारी, पृ० 491-493

टोपी

1. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सफ़ेद टोपी पहनते थे। इसको तबरानी ने रिवायत किया। सुयूती ने जामे सग़ीर में फ़रमाया कि उसकी सनद हसन है।

—अस्सिराजुल मुनीर, भाग 4, पृ० 112

2. इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सफ़ेद टोपी पहनते थे। उसको तबरानी ने मोजम कबीर में रिवायत किया। उसमें एक रावी अब्दुल्लाह बिन ख़राश हैं। इब्ने हब्बान ने उनकी तौसीक़ की है और फ़रमाया कि कभी-कभी ग़लतियां करते हैं। जम्हूर ने इसे ज़ईफ़ बताया है, बाक़ी रिजाल सक़ा है।

—मज्मउज़्ज़ वाइद : हैसमी, भाग, 2, पृ० 124

3. इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है कि हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सफ़ेद टोपी पहनते थे। तबरानी ने उसको मोजम अवसत में अपने उस्ताद मुहम्मद बिन हनफ़ीया वास्ती से नक़ल किया है, जो ज़ईफ़ हैं।

—मज्मउज़्ज़ वाइद, भाग 2, पृ० 124

4. अबुश्शैख़ ने इब्ने अब्बास रज़ि० से रिवायत किया है कि हज़रत

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास तीन टोपियां थीं।

—बज़्लुल मज्हूद, भाग 6 पृ० 52

5. मुख़्तसर में है हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तीन टोपियां इस तरह की थीं—

एक (अन्दर में कोई चीज़ रख कर) सिली हुई,

दूसरी (यमनी) हिबरा चादर की,

तीसरी कान वाली, जिसको आप सफ़र में पहनते थे। कभी अपने सामने नमाज़ पढ़ते वक़्त रख लेते। (यह हदीस ज़ईफ़ है)—तज़्करतुल मौज़ूआत, पृ० 155

6. हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सफ़ेद (सर से) चिपटी हुई टोपी पहनते थे। (इब्ने असाकिर ने इसको रिवायत किया, इसकी सनद ज़ईफ़ है) —फ़ैज़ुल क़दीर, भाग 5, पृ० 246

7. हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मुहरिम (एहराम में) आदमी कुरता, पाजामा और (एक ख़ास क़िस्म की) टोपी पहनेगा।

—बुख़ारी शरीफ़, भाग 1, पृ० 209, भाग 2, पृ० 864

इससे मालूम हुआ कि लोग हज़रत सल्ल० के ज़माने में टोपी पहनते थे।

8. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० की रिवायत हदीस नं० 29 पर गुज़र चुकी है कि हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम टोपी अमामा के नीचे और बग़ैर अमामा के भी पहनते थे। (इब्ने असाकिर वग़ैरह ने इसको रिवायत किया है। सनद के एतबार से ज़ईफ़ है।)

9. हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है कि हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सफ़र में कान वाली टोपी पहनते थे और हज़र में पतली यानी शामी टोपी (अबुश्शेख़ ने इसको रिवायत किया)। यह हदीस इदीस नं० 29 के ज़ैल में ज़िक्र हो चुकी है।

10. अबू कबशा अनमारी रज़ि० फ़रमाते हैं कि सहाबा रज़ि० की टोपियां फैली हुई, चिपकी हुई होती थीं। (तिर्मिज़ी ने इससे रिवायत किया। यह हदीस ज़ईफ़ है)

—भाग 1, पृ० 308

हज़रत गंगोही रह० फ़रमाते हैं यानी सर को घेरे हुए थीं, सर पर उठी हुई नहीं, बल्कि उस पर फैली हुई थीं। —अल-कौकब अद्दर्री, भाग 2, पृ० 452

रिवायत में लफ़्ज़ अकमाम आया है यह कुम्मा की जमा (बहुवचन) है जिसका मतलब है टोपी, अगर यह कुम की जमा मानी जाए, तो उस वक़्त

हदीस का तर्जुमा होगा कि सहाबा किराम की आस्तीनें चौड़ी थीं।

सहाबा किराम रज़ि० और ताबिईन रह० की टोपियों का ज़िक्र

11. ज़ैद बिन ज़ुबैर रज़ि० कहते हैं कि मैंने अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ि० पर टोपी देखी। रिवायत में लफ़्ज़ 'बरतला' आया है जो एक क़िस्म की टोपी होती है।

हिशाम बिन उर्वः भी कहते हैं कि मैंने इब्नुज़्ज़ुबैर पर बारीक टोपी देखी।

12. ईसा बिन तहमान कहते हैं कि मैंने अनस बिन मलिक-रज़ि० पर टोपी देखी। रिवायत में बुरनुस का लफ़्ज़ है, जिसके मानी लम्बी टोपी होते हैं। बुख़ारी शरीफ़ में भी हज़रत अनस के सर पर टोपी देखने का ज़िक्र है।

13. अशअस के वालिद कहते हैं कि मैंने देखा कि अबू मूसा अशअरी रज़ि० बैतुल ख़ला से निकले और उनपर टोपी थी।

14. इस्माईल कहते हैं कि मैंने शुरैह पर टोपी देखी।

15. अबू शहाब कहते हैं कि मैंने सईद बिन ज़ुबैर रज़ि० पर टोपी देखी। (ये दोनों यानी शुरैह और इब्ने ज़ुबैर ताबई हैं) अली बिन हुसैन यानी हज़रत ज़ैनुल आबदीन, इब्राहीम नख़ई और ज़हहाक पर भी टोपी देखने की रिवायत है।

(ये तमाम रिवायतें मुसन्निफ़ इब्ने अबी शैबा, भाग 8, पृ० 212, 213 और 214 पर सनद के तौर पर ज़िक्र की गई हैं)

हज़रत अली रज़ि० के सर पर मिस्री सफ़ेद टोपी थी।

—तबक़ाते इब्ने साद उर्दू, जिल्द 3, पृ० 187

अबू इसहाक़ सबीई ताबई पर टोपी का ज़िक्र बुख़ारी में है।

भाग 1, पृ० 159

इब्नुल अरबी फ़रमाते हैं कि टोपी नबियों और सालिहीन के लिबास से है। सर की हिफ़ाज़त करती है और अमामा को जमाती है, जो सुन्नत है और उसका हुक्म यह है कि सर से चिपकी हुई हो, क़ुबा की तरह (उठी हुई) न हो, हां अगर किसी को यह ज़रूरत हो कि सर से जो बुख़ारात निकलते हैं उनसे सर को बचाना हो, उसके लिए टोपी में सूराख़ कर दे तो यह इलाज के तौर पर होगा। —फ़ैज़ुल क़दीर, भाग 5, पृ० 287

तिर्मिज़ी शरीफ़ में हज़रत उमर रज़ि० से रिवायत है कि हज़रत

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, एक शहीद वह है जिसका ईमान उम्दा हो और दुश्मन से मुलाक़ात के वक़्त अल्लाह तआला के वायदों की तस्दीक़ करते हुए बहादुरी से लड़े और शहीद हो जाए, उसका दर्जा इतना बुलन्द है कि लोग क़ियामत के दिन उसकी तरफ़ अपनी निगाह इस तरह उठाएंगे, यह कह कर हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने या हज़रत उमर रज़ि० ने जो हदीस रिवायत करने वाले हैं, अपना सर उठाया, यहां तक कि सर से टोपी गिर गई। —तिर्मिज़ी, भाग 1, पृ० 298

इससे मालूम हुआ कि हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के या हज़रत उमर रज़ि० के सर पर टोपी थी।

कुरता (क़मीज़)

कुरता आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सबसे ज़्यादा पसन्द था।

1. हज़रत उम्मे सलमा रज़ि० फ़रमाती हैं कि कपड़ों में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सबसे ज़्यादा महबूब कुरता था

—तिर्मिज़ी, भाग 1, पृ० 306 व शिमाइले तिर्मिज़ी, पृ० 5

तिर्मिज़ी ने कहा, यह हदीस हसन ग़रीब है और हाकिम ने फ़रमाया यह मुस्लिम की शर्त के मुताबिक़ सहीह है। अल्लामा ज़हबी ने भी इसको सहीह बताया। (मुस्तदरक हाकिम, भाग 4, पृ० 192) यह रिवायत अबू दाऊद और नसई में भी है। इब्ने माजा में यह रिवायत यों है कि कोई कपड़ा आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कुरते से ज़्यादा पसन्द नहीं था।

—इब्ने माजा, पृ० 255

कुरते के पसन्दीदा होने की वज्हें उलेमा किराम ने ये बताई हैं। लुंगी और चादर के मुक़ाबले में यह जिस्म को ज़्यादा छिपाता है, कमख़र्च और जिस्म पर हलका होता है। इसमें तवाज़ोअ़ ज़्यादा है। —जमउल वसाइल, भाग 1, पृ० 107

हज़रत शेख़ मुहम्मद ज़करिया रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि कुरते में सतर औरत भी अच्छी तरह ढका होता है और साथ ही साथ तजम्मुल और ज़ीनत भी अच्छी होती है। —ख़साइले नबवी, पृ० 36

2. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब कुरता पहनते थे तो दाहिनी तरफ़ से शुरू फ़रमाते थे। (यानी दाहिना हाथ आस्तीन में पहले दाख़िल फ़रमाते) —तिर्मिज़ी, भाग 1, पृ० 306

कुरते और उसकी आस्तीन की लम्बाई

3. हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का कुरता टख़नों के ऊपर होता था और उसकी आस्तीन उंगलियों के बराबर। (मुस्तदरक हाकिम, भाग 4, पृ० 195) हाकिम और ज़हबी ने फ़रमाया, यह हदीस सहीह है।

इब्ने असाकिर ने भी इसको ज़ईफ़ सनद के साथ ज़िक्र किया है।

—अल-जामिउस्सग़ीर मय फ़ैज़ुल क़दीर, भाग 5, पृ० 256, फ़ैज़ुलक़दीर भाग 5, 176

अल्लामा मनावी इसकी शरह फ़रमाते हैं, टख़नों से ऊपर यानी आधी पिंडुली तक जैसा कि एक रिवायत में आया है। हज़रत शेख़ ज़करिया लिखते हैं, अल्लामा शामी ने लिखा है कि आधी पिंडुली तक होना चाहिए।

अगर कुरता बहुत ऊंचा हो, जैसे घुटने तक या उससे ऊपर तो मुहावरे में उसको टख़ने से ऊपर नहीं कहेंगे। इसका मतलब यही होगा कि टख़नों से ऊपर होगा, मगर कुछ क़रीब। वल्लाहु आलम बिस्सवाब

4. हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कुरते की आस्तीन पहुंचे तक थी। बज़्ज़ार ने इसको रिवायत किया है। इसके रिजाल सिक़ा हैं। —मज्मउज़्ज़ वाइद, भाग 5, पृ० 124

5. हज़रत अस्मा बिन्त यज़ीद रज़ि० से भी रिवायत है कि हज़रत के हाथ की आस्तीन पहुंचे तक थी। [(तिर्मिज़ी ने पृ० 306 में) इससे रिवायत किया और फ़रमाया यह हदीस इसन ग़रीब है] सुयूती ने भी हसन कहा है। (फ़ैज़ुल क़दीर, भाग 5, पृ० 174) अबू यज़ीद अक़ीली से भी ऐसी ही रिवायत है।

—इब्ने अबी शैबा, भाग 8, पृ० 211

तंबीह— आस्तीन की लंबाई के बारे में भी ये दोनों बातें कि पहुंचे तक होती थी या उंगलियों के बराबर, आपस में एक दूसरे के ख़िलाफ़ नहीं, क्योंकि हो सकता है कि किसी कुरते की आस्तीन पहुंचे तक रही हो और दूसरे कुरते की उंगलियों तक। इस पर अगर कोई यह कहे कि हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास सिर्फ़ एक ही कुरता था, जैसाकि तबरानी ने अबुद्दर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत किया कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास एक कुरता था। —मज्मउज़्ज़वाइद, भाग 5, पृ० 124

और हज़रत आइशा रज़ि० से रिवायत है कि हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम ने सुबह का खाना शाम के लिए और शाम का खाना सुबह के लिए उठा कर नहीं रखा और न किसी चीज़ के दो अदद बनाए, न दो कुरते, न दो चादर, न दो लुंगी, न दो चप्पल।

—शरह शिमाइल लिलमनावी मय जमउल वसाइल, पृ० 107 अन किताबिल वफ़ाः इब्नुल जौज़ी

तो इसका जवाब यह है कि हज़रत अबुद्दर्दा की हदीस ज़ईफ़ है, इसलिए कि इसकी सनद में सईद बिन मैसरा ज़ईफ़ रावी हैं।—मज्मउज़्ज़वाइद, भाग 5, पृ० 124

हज़रत आइशा रज़ि० की हदीस का हाल मालूम नहीं और दोनों हदीसों के एतबार के क़ाबिल मानने की शक्ल में यह मतलब हो सकता है कि एक ही वक़्त में दो अदद जमा नहीं फ़रमाते थे, लेकिन दो वक़्त में दो क़िस्म के कपड़े हो सकते थे, इसमें कोई परेशानी नहीं, लेकिन तहक़ीक़ी बात यह है कि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास एक वक़्त में भी दो कुरते थे।

—बुख़ारी शरीफ़, जिल्द 1, पृ० 180

कुछ उलेमा ने यह जवाब भी दिया कि तख़्मीना और अन्दाज़े से ये दोनों बातें कही गई हैं या यह कि जिस वक़्त कुरता धुला जाता था और आस्तीन की शिकनें ख़त्म हो जाती थीं, उस वक़्त उंगलियों तक पहुंच जाती और जब इस्तेमाल के बाद शिकनें ख़त्म हो जातीं, तो फिर सिकुड़कर पहुंचे तक पहुंच जाती। इसके अलावा भी जवाब दिए गए हैं। —देखिए जमउल वसाइल, पृ० 110

6. हज़रत इब्ने अब्बास से रिवायत है कि हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ऐसा कुरता पहनते थे जिस की लम्बाई कम और आस्तीनें छोटी थीं।

—इब्ने माजा, पृ० 256

इमाम सुयूती ने जामे सग़ीर में उसके हसन होने की तरफ़ इशारा किया है, लेकिन हाफ़िज़ इराक़ी ने इसको ज़ईफ़ बताया है।—फ़ैज़ुल क़दीर, भाग 5, पृ० 246

सेहत की शक्ल में मतलब यह होगा कि कुरता इतना लम्बा नहीं होता था कि टख़्ने से नीचे चला जाए और न आस्तीन इतनी लम्बी होती थी कि उंगलियों से भी आगे निकल जाए।

ताकि यह रिवायत दूसरी रिवायतों के ख़िलाफ़ न हो जाए, वरना टकराव की शक्ल में इसमें सहीह रिवायतों को तर्जीह होगी।

7. हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है कि इसबाल (यानी बहुत लम्बा करना जो मकरूह है) लुंगी, कुरता और अमामा (तमाम में) होता है, जो इनमें से किसी को भी तकब्बुर की वजह से खींचे, अल्लाह तआला क़ियामत के दिन

उसकी तरफ़ नहीं देखेंगे। —मुसन्निफ़ इब्ने अबी शैबा, भाग 8, पृ० 209

8. शोबा कहते हैं कि मैं मुहारिब बिन दिसार से मिला। वह घोड़े पर सवार होकर क़ज़ा के लिए दारुल क़ज़ा जा रहे थे। मैंने उनसे यह हदीस पूछी, तो फ़रमाया, मैंने इब्ने उमर रज़ि० से सुना फ़रमा रहे थे कि हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो अपने कपड़े को (भले ही लुंगी, पाजामा हो या कुरता) तकब्बुर से ख़ींचेगा, अल्लाह तआला उसको क़ियामत के दिन (रहमत की नज़र से) नहीं देखेंगे।

शोबा कहते हैं कि मैंने महारिब से पूछा कि इब्ने उमर रज़ि० ने लुंगी का ज़िक्र किया तो फ़रमाया, लुंगी या पाजामा या कुरता को ख़ास नहीं किया। (बुख़ारी शरीफ़, भाग 2 पृ० 861) यानी यह हुक्म तमाम कपड़ों पर आम है, भले ही लुंगी हो या कुरता। यही बात मुजाहिद और इक्रिमा से भी रिवायत की गई है। —इब्ने अबी शैबा, भाग 8, पृ० 209

(तंबीह) कोई यह न कहे कि मैं अगरचे पाजामा या कुरता टख़ने से नीचे रखता हूं, लेकिन मेरे अन्दर तकब्बुर नहीं है, इसलिए कि हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया—

'ईया-क व इस्बालल हज़ार फ़इन्नहा मिनल मख़ीला' —अबूदाऊद मिश्कात

मालूम हुआ कि टख़ने के नीचे करना यह खुद तकब्बुर की ख़स्लत है और लोग हैं कि उससे ग़ाफ़िल हैं।

9. हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक बार हज़रत उमर रज़ि० को नया कुरता पहनने को फ़रमाया। (तबक़ात) फिर यह कि हज़रत उमर रज़ि० ने सुंबलानी कुरता पहना, जिसकी आस्तीन पहुंचे से आगे नहीं थी।

—तबक़ात, भाग 3, पृ० 112

सहाबा और ताबिईन के कुरते और उनकी कैफ़ियत

1. हज़रत उमर रज़ि० ने नया कुरता पहना, उसकी आस्तीन उंगलियों से ज़्यादा थी। अपने बेटे अब्दुल्लाह से फ़रमाया उंगलियों से ज़्यादा आस्तीन को काट दो। —मुस्तदरक हाकिम, भाग 4, पृ० 185 व हयातुसस्हाबा, भाग 2, पृ० 908

2. हज़रत अली भी आस्तीन को फैलाते। उंगलियों से ज़्यादा को काट देते और फ़रमाते कि आस्तीनों को हाथ पर फ़ज़ीलत नहीं है। —हयातुस्सहाबा, भाग 2, पृ० 708, इब्ने अबी शैबा, भाग 8, पृ० 210, तबक़ाते इब्ने साद, भाग 3, पृ०186

3. अबुल ख़ैरी कहते हैं कि मैंने हज़रत अनस रज़ि० को देखा कि कुरते की आस्तीन पहुंचे तक थी। — मुसन्निफ़ इब्ने अबी शैबा, भाग 8, पृ० 211

4. हज़रत अली रज़ि० एक सूती कपड़े का कारोबार करने वाले के पास गए और फ़रमाया, तुम्हारे पास संबुलानी कुरता है? उसने एक कुरता निकाला। हज़रत अली रज़ि० ने उसको पहना, पिंडुलियों के आधे तक या दाएं-बाएं देख कर फ़रमाया, अच्छी मिक़्दार में मालूम होता है, कितने में दोगे? उसने कहा, अमिरुल मोमिनीन, चार दिरहम में। हज़रत अली रज़ि० ने अपनी लुंगी में से दिरहम निकाल कर दिए और चल दिए। —हयातुस्सहाबा अन अहमद फ़िज़्ज़ुहद, भाग 2, पृ० 710

एक रिवायत में है कि हज़रत अली रज़ि० ने तीन दिरहम में एक कुरता ख़रीद कर पहना जो पहुंचों से लेकर टख़ने तक था।

—हयातुस्सहाबा, भाग 2, पृ० 566

एक रिवायत में है कि उनके जिस्म पर मोटे कपड़े का एक कुरता था, जो टख़नों के ऊपर था और उसकी आस्तीन उंगलियों तक थी और उंगलियों की जड़ खुली हुई थी। —तबक़ाते इब्ने साद, भाग 3, पृ० 186

5. मुहम्मद बिन उमैर कहते हैं कि मैंने सालिम को देखा कि वह अपना कुरता टख़नों के ऊपर रखे हुए थे। फ़रमाया, मैंने इब्ने उमर रज़ि० को देखा, उन का कुरता भी ऐसा ही था। —इब्ने अबी शैबा, भाग 8, पृ० 209

6. हज़रत अता फ़रमाते हैं कि अब्दुर्रहमान बिन औफ़ सूती कुरता पिंडुलियों के आधे तक पहनते थे और चादर सुरीन तक होती थी। (तबरानी ने इससे रिवायत किया) इसमें एक रावी उस्मान बिन अता हैं, ज़ईफ़ हैं, लेकिन मुहद्दिस रहीम ने उनको सिक़ा बताया है। —मज्मउज़्ज़वाद, भाग 5, पृ० 124

ऐसे मुख़्तलफ़ फ़ीहि (जिसके बारे में अलग-अलग राय हो) रिवायत करने वाले की रिवायत हसन होती है।

7. अब्दुल्लाह बिन अबी हुज़ैल कहते हैं कि मैंने हज़रत अली रज़ि० को देखा, उन पर राज़ी या राई कुरता था। जब उसको छोड़ देते तो पिंडुलियों के आख़िर तक पहुंचता। —इब्ने अबी शैबा भाग 18, पृ० 211

8. ताऊस ताबई का कुरता लुंगी के ऊपर होता था और चादर कुरते के ऊपर होती थी। —इब्ने अबी शैबा, भाग 8, पृ० 209

9. दाऊद बिन क़ैस कहते हैं कि मैंने क़ासिम को देखा, उनका कुरता टख़ने तक था (वही) शायद टख़ने के क़रीब तक रखा होगा। टख़नों को

छिपाना और उनके नीचे करना मना है।

बुख़ारी वग़ैरह की वह हदीस दो बार गुज़र चुकी है जिस में मुहरिम[1] को कुरता, टोपी वग़ैरह से मना किया गया है। इससे मालूम होता है कि हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ज़माने में टोपी अमामा आम तौर से इस्तेमाल होते थे। कुरते की तफ़सीलात ऊपर की रिवायतों से मालूम हुईं।

अल्लाह तआला पूरी उम्मत को रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और सलफ़े सालिहीन की पैरवी की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए और यहूदियों, ईसाइयों और मुश्रिकों से मिलते-जुलते कामों से बचाए। आमीन

اللهم تقبل منی هٰذا او وفقنی ایایَ والمسلمین لاتباع سید المرسلین و اصحابه واتباعهم فی عباداتهم وعاداتهم و شمائلهم و صلی الله علٰی حبیبه وصفیه محمدٍ وَاٰله وصحبه وامتهٖ اجمعین۔ واٰخر دعوانا ان الحمد للهِ رب العالمین۔

अल्लाहुम-म तक़ब्बल मिन्नी हाज़ा व वफ़्फ़िक़्नी ईया-य वल मुस्लिमीन लि-इत्तिबाइ सय्यिदिल मुर्सलीन व अस्हाबिही व अतबाअ़िहिम फ़ी इबादातिहिम व आदातिहिम व शमाइलिहिम व सल्लल्लाहु अला हबीबिही व सफ़ीयिही मुहम्मदिंव-व आलिही व सह्बिही व उम्मतिही अजमईन व आख़िरु दावाना अनिल हम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन

फ़ज़्लुर्रहमान आज़मी ग़ुफ़ि-र लहू
आज़ादोल, साउथ अफ़रीक़ा
जुमा से पहले, 4 रबीउल आख़र 1412 हि०
मुताबिक़ 11 अक्तूबर 1991 ई०

---

1. एहराम बांधा हुआ आदमी

कुछ लेखक के बारे में

पैदाइश और तालीम

पैदाइश 1366 हि०को मऊ में हुई। शुरू से लेकर आख़िर तक तालीम मऊ ही में हुई और 1386 हि० में मिफ़्ताहुल उलूम मऊ से फ़रागत हासिल की। फ़रागत के बाद अलग-अलग बहुत सी किताबें एक-एक करके पढ़ीं, क़िराते सबआ भी, मुहद्दिसे कबीर मौलाना हबीबुर्रहमान आज़मी रह० की ख़िदमत में रह कर फ़तावा की किताबों का मुताला किया और इफ़्ता की मश्क़ की।

मशहूर उस्तादों में मुहद्दिस आज़मी, मौलाना अब्दुल्लतीफ़ नोमानी रह० और मौलाना अब्दुर्रशीद वग़ैरह हैं।

ख़िदमत

तीन चार साल के बाद मज़हरुल उलूम बनारस में पढ़ाना शुरू किया, जिनमें मिश्कात व तिर्मिज़ी भी हैं। वहां फ़तवे लिखने की ख़िदमत भी अंजाम दी। चार साल वहां क़ियाम रहा।

फिर 1394 हि० में जामिया डाभेल तशरीफ़ ले गए और वहां अक्सर दरसी किताबें पढ़ाईं, आख़िर में मिश्कात, जलालैन, तहावी, इब्ने माजा, नसई वग़ैरह भी पढ़ाई। वहीं तारीख़े जामिया इस्लामिया डाभेल भी तर्तीब दी, जो छप चुकी है। 1403 हि० में सबआ अशरा भी पढ़ाई और मुक़दमा इल्मे क़रात भी तर्तीब दिया, जिस में क़ुर्रा अशरा और उनके रिवायत करने वालों का तज़्करा भी है।

1406 हि० में मदरसा इस्लामिया आज़ादोल, दक्षिणी अफ़रीक़ा तशरीफ़ लाए। 1408 हि० से शेख़ुल हदीस मुक़र्रर हुए और अल्लाह के फ़ज़्ल से अलग-अलग किताबें, बुख़ारी, तिर्मिज़ी और तहावी पढ़ाते रहते हैं।

कई किताबें और रिसाले भी आपने तैयार किए जो अब छप रहे हैं। अल्लाह का शुक्र है कि तब्लीग़ी ख़िदमतों में भी बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेते हैं। मुख़्तलिफ़ शहरों और जगहों के सफ़र भी होते रहते हैं जैसे इंग्लैंड, हालैंड, फ़्रांस, इस्तम्बोल, मारीशस, रियूनियन और अफ़रीक़ा के दूसरे मुल्क, हरमैन शरीफ़ैन की ज़ियारत से भी बार-बार मुर्शरफ़ हो रहे हैं।

हज़रत मौलाना हकीम मुहम्मद अख़्तर साहब मद्द ज़िल्लहू (ख़लीफ़ा हज़रत मौलाना अबरारुलहक़्क़ साहब हरदोई मद्दज़िल्लहू) के ख़लीफ़ा भी हैं। अल्लाह के फ़ज़्ल से दीन के अक्सर शोबों में मेहनत फ़रमाई है। अल्लाह तआला इल्म व अमल और उम्र व सेहत में बरकत अता फ़रमाए। (आमीन)

—अतीक़ुर्रहमान आज़मी

"सुन्नत के असल माअ़नी तरीक़े के हैं, हुज़ूरे अक्रम ﷺ की सुन्नतें दो तरह की हैं:

(1) सुन्नते इबादत, यानी वह काम जो आप ﷺ ने इबादत के तौर पर किये हैं, वह बहुत अहम हैं और वह काम दीन का हिस्सा हैं, उनमें फिर बहुत ज़रूरी या कम ज़रूरी का भी फ़र्क़ होता है।

(2) दूसरी क़िस्म की सुन्नत "सुन्नते आदत" कहलाती हैं जो आप ﷺ आदत के तौर पर करते थे वह दीन का हिस्सा या बहुत अहम नहीं हैं। लिबास और चेहरे मोहरे की जिन बातों को आप ﷺ ने ज़रूरी बताया है वह तो ज़रूरी हैं, बाक़ी अक्सर चीज़ें ऐसी हैं कि उनको किया जाये तो मुहब्बते नब्वी ﷺ का ऐन तक़ाज़ा है, और कोई अपने हालात की वजह से न कर सके तो कोई गुनाह नहीं।

इस किताब में इन्हीं बातों की ज़रूरी तफ़्सील मुस्तनद किताबों के हवाले से पेश की गई है।

ISBN 81-7101-513-1 www.idara.co
9 788171 015139 ₹ 25000